तकदीर जगा कर आई हूँ.... ओम् शान्ती प्रात: क्लास 22-2-67

गीत बच्चों ने सुना इस गीत का जो अर्थ समझ सक्ते है वो हाथ उठाओं। जो नही समझ सक्ते है वो हाथ उठायें। (वड़ौदा की पार्टी ने हाथ उठाया क्यों कि वो नयें थे) यह तो कामन गीत है। इसका अर्थ भी समझ नही सक्ते है। तुम्ही कितुम हो माली। बाप है बागबान। अब मालियों को काटों से फूल बनाना है। तो किस प्रकार के फूल लायें हो जो इसका अर्थ भी नही समझ सक्ते। यह अक्षर बहुत क्लीयर है। कलीयर भक्तियां आई है भगवान पास। यह सब [illegible] है नो। अब ज्ञान की पढ़ाई पढ़ने बाप पास आई है। इस राज योग की पढ़ाई से ही नई दुनियां का मालिक बन सक्ते है। तो भक्तियां कहती है हम तकदीर बना कर आई है। नई दुनियां दिल में बसा कर आये है। बाबा भी कहते है रोज की स्वीट होम और स्वीट बाप को याद करो। आत्मा को बाप को याद करना है। हर एक सेन्टर पर काटों से फूल बन रहे है। फूलों में भी नम्बरवार होते है नो। शिव के ऊपर फूल चढ़ते है। कोई कैसे फूल चढ़ाते है कोई कैसे फूल चढ़ाते है। कोई तो अक के फूल भी चढ़ाते है। गुलाब के फूल और अक के फूल में रात दिन का फर्क है। यह है बगीचा। कोई मोतिये है कोई चम्पा है। कोई रत्नजोत के तो कोई अक के भी है। बच्चे जानते है इस समय सब है काटें। यह दुनियां ही कांटों का जंगल है। उनको बनाना है नई दुनियां के फूल। इस पुरानी दुनियां में है काटें। तो गीत में भी हम आये है पुरानी दुनियां के कांटो से नई दुनियां के फूल बनाने बाप के पास। जो बाप नई दुनियां स्थापन कर रहे है। काटों से फूल अर्थात नई दुनियां स्थापन कर रहे हो। तकदीर बनाने आये है। कितना सहज है गीत का अर्थ। हम आये है तकदीर बनाने नई दुनियां के लियें। नई दुनियां है सतयुग। कोई की सतोप्रधान तकदीर है कोई की रजो तमो होती है। कोई सूर्यवंशी राजा बनते है तो कोई प्रजा बनते है। कोई तो प्रजा के भी नौकर चाकर बनते हो। यह नई दुनियां की राजाई स्थापन हो रही है। स्कूल में तकदीर जगाने जाते है नो। यहाँ तो है नई दुनियां की बात। इस पुरानी दुनियां में क्या तकदीर बनायेंगे। यहाँ तो सब किछु टिम्ड्न जावर मिसल है। अब देवता फूल बनते हो। यहा देवताओं को नमन करते आये हो। हम सो देवता पूज्य थे फिर हम ही पुजारी बने है। पुनर्जन्म लेते। 21 जन्मों का वर्सा तो मिला। 21 पीढ़ी कहा जाता है। पीढ़ी वृध अवस्था को कहा जाता है। बाप 21 पीढ़ी का वर्सा देते है। क्यों कि वहा बचपन में बीच में कब अकाले मृत्यु होती नही है। इसलिये उनको कहा जाता है अमर लोक। यह है मृत्यु लोक। रावण राज्य है फिर बाप आकर अमर लोक बनाते है। अमर लोक है फूलों का बगीचा। मृत्यु लोक है काटों का जंगल। जिसको ही वहिश्त कहा जाता है। भारतवासियों को यह भी पता नही कि भारत को फूलों का बगीचा कहा जाता है। आदी सनातन देवी देवता धर्म था। यह भी समझते नही है बिलकुल ही अहिल्या पत्थर बुधी बन गये है। यह गीत तो आसुरी सम्प्रदाय का बना हुआ है। वेद शास्त्र आद जो जो भी है वो सब आसुरी सम्प्रदाय के बने हुये है। वैसे ही यह गीत भी आसुरी सम्प्रदाय का बना हुआ है। वो गीत का अर्थ भी समझ नही सक्ते। जैसे बाप सभी वेदों शास्त्रों का वैसे इन गीतों का भी सार बताते है। मनुष्य कुछ भी नही जानते। देवताओं के आगे जाकर महिमा गाते है अर्थ कुछ भी नही। जैसे मेंढ़क टर्रों-2 करते है। अर्थ थाड़ेई है। वैसे ही यह भी बिलकुल ही बेसमझ बन गये है। माया ने बेसमझ बना दिया है। यहां कोई को भी ले आना है तो समझदार बना कर। ऐसे नही कि यह कोई मेला मिलाखड़ा है। समझते है बहुतों का पण्ढ़ा बन कर जावें। बाबा भी क्या कहेंगे कि माली कौनसे फूल ले आया है। मालीपना भी सीखना होता है। सीखने वाले और सीखे हुये में भी फर्क रहता है नो। बाबा मालियों को भी देखते है कौनसे-2 फूल ले आते है। बाप के पास अक तो नही ले आना चाहिये नो। ऐसे-2 को ले आते है जिनमें कुछ भी ज्ञान नही। मैनर्स नही। कोई भी विकार है तो काटा हुआ नो। ऐसों को तो नही ले आना चाहियें नो। जो समझ भी नही सके। बाबा समझेंगे माली स्वभावुदी फूल बनाना नही सीखे हैं।

माली होशियार होगा तो अच्छा फूल तैयार करेंगे। विजय माला में पिरोने वाले? देवताओं के पास अच्छे-2 फूल ले जाते है नां। समझो रानी आती है जो एकदम फर्स्ट क्लास फूलों की माला इकट्ठा कर ले जावेंगे। यहां के तो मनुष्य है तमोप्रधान। शिव के मन्दिर में भी जाते है समझते भी है कि यह भगवान है। ब्रह्मा विष्णु शंकर को तो देवता कहते है। शिव को भगवान कहेंगे। तो वो ऊच ते ऊच हुआ नां। अब शिव के लिये कहते है धतूरा खाते थे। भांग पीते थे। कितनी ग्लानी कर दी है। तो फूल भी अक के ले जाते है। अब ऐसे परमपिता परमात्मा उनको पास क्या ले जाते है? तमोप्रधान काटों के पास फिर सैकेन्ड क्लास फूल ले जाते है। और शिवके मन्दिर में क्या ले जाते है। दूध भी कैसा चढ़ाते है। 5% दूध95% पानी। भगवान पर दूध कैसा चढ़ाना चाहिये। जानते कुछ भी नही। पानी में दूध डाल कर बस रंग बना कर डाल देते है। अब तुम अच्छी रीती जानते हो। जो अच्छा जानते है उनको सेन्टर का हेड बनाया जाता है। सब तो एक जैसे नहीहोते है नां। भले पढ़ाई तो एक ही है, मनुष्य से देवता बनने की ऐम आबजेक्ट है। परन्तु टीचर तो नम्बरवार है नां। कोई वकील कोई डाक्टरबनते है। पढ़ाई एक ही होती है। पास तो नम्बरवार होते है नां। सारा मदार पढ़ाई पर है। कोई तो विजय माला के 8दानों में आते है।कोई 108 में और कोई 16108 में आते है। सितारा बनता है नां। जैसे झाड़ का भी सिजरा बनता है। पहले पहले दो पते फिर 4-6 पत्ते निकलते है। यह भी झाड़ है। बादरियां होती है नां। जैसे कृपलानी ब्रादरी। वो है हद हद की ब्रादरियां है। यह है बेहद की ब्रादरियां है । इनका पहले-2 कौन है? प्रजापिता ब्रह्मा। इनको कहेंगे ग्रेट 2 ग्रेट फादर। परन्तु क्या किसको पता नही। मनुष्य मात्र विद्वान आचार्य जरा भी नही जा जानते कि सृष्टी का रचता कौन है। बिलकुल ही अहिल्या पत्थर बुधी है। ऐसे जब बन जाते है तबही बाप आते है। सतयुगमें होतेहै पारस बुधी। तो तुम यहां आये हो अहिल्या बुधी से पारस बुधी बनने। तो नालेज भी धारन करनी चाहिये नां। बापको तो पहचानना चाहिये नां। पढ़ाई का ख्याल करना चाहिये। समझो आज आये है कल कुछ हो जाता है मर जाते है। फिर क्या पद पावेंगे। नालेज तो कुछ भी उठाई नही, कुछ भी सीखा नही तो क्या पद पावेंगे। दिन है प्रति दिन जो देरी से शरीर छोड़ते है उनको ह टाइम थोड़ा मिलता है,क्यों कि समय ही है बाकी 9वर्ष। हां तुम्हारे में से जो जावेंगे वो अच्छे घर में जन्म लेंगे। संस्कार ले जाते है तो वो आत्मा [illegible] जाग जावेगी।शिव बाबा को याद करने लगेगी। संस्कार ही [illegible] हुये नही होंगे तो कुछ भी नही होगा। इस ज्ञान को बहुत महानता से समझना होता है। माली अच्छे-2 फूलों को ले जाते है। तो उनकी महिमा भी गाई जाती है। फूल बनाना तो माली का काम है नां। बाप को याद करना आता ही नही है। ऐसे बहुत बच्चे है जिनको याद करना भी आता नही है। तकदीर पर है नां। तकदीर में नहीहै तो कुछ भी समझते नही है। बाप कहते है बाप को पहचाना है तो पूरी रीती याद करो। और नई दुनियां को याद करो। गीत में भी गाते है नां हम नई दुनियां के लिये नई तकदीर बनाने आये है। 21जन्मों लिये बाप से राजभाग लेना है। इस नशे में इस खुशी में रहे तो ऐसे-2 गीत का अर्थ आसानी से समझ जावे। स्कूल में भी कोई की तकदीरमें नही होता है तो फेल हो जाते है। यहां तो बहुत बड़ी परीक्षा है। यह नालेज सभी धर्म वालों के लिये है। बाप कहते है अपने को आत्मा समझ मुझ ब बाप को याद करो। सन्यासियों के कहने के अनुसार अपने को परमात्मा मतसमझो। अपने को परमात्मा कहलाना ईश्वर सर्वव्यापी है, शिवोअहम् तत त्वम्.... यह तो शैतानी है नां। सन्यासी बहुत सिखाते है। अहम् ब्रह्म अस्मि कहते है और कुछ भी नही जानते। ब्रह्म कोईश्वर कह देते है। हम ईश्वर इस रचना के मालिक ठहरे। अच्छा मालिक ठहरे,तो रचता और रचना की आद मध्य अन्त का ज्ञान तो सुनाओ? परन्तु ऐसे-2 परिचय [illegible] उनसे पूछे कौन? खुद ही नही जानते है तो पूछेंगे कैसे? यह तुम अभी समझते हो। और कोई को मालूम नही है कि गुप्तकी पढ़ाने वाला कौन है।वो तो श्रीकृष्ण को भगवान कह देते है। भगवानोवाच्य कहते

खुद भगवान है तो क्यूँ नही अपने ही लिये कहेंगे। एक कृष्ण के लिये ही क्यों कहते हैं कि कृष्ण भगवानो
वाच्य।वो भी भगवान तो है नहीं नही। मनुष्य को भगवान कह नही सकते। ब्रह्मा विष्णु शंकर को भी
भगवान नही कहेंगे। वो भी देवतायें हैं सूक्ष्म वतन वासी। यहां है मनुष्य। यहां देवतायें नही हैं। ब्रह्मा देवता
देवता विष्णु देवता कहते हैं। (मूल वतन में रहती हैं आत्मायें) यहां यह है मनुष्य लोक। यह ल०ना० आदि
दैवी गुण वाले मनुष्य है। डीटीइजिम कहा जाता है। सतयुग में सभी दैवी देवताये है। तो वो कैसे होंगे।
सूक्ष्म वतन में है ही ब्रह्मा विष्णु शंकर। गाते भी हैं विष्णु देवताये नमः शंकर देवताये नमः फिर कहते
है शिव परमात्माये नमः शिव को देवता नही कहेंगे। और मनुष्य को फिर भगवन नही कह सकते। तीन तबके
है नां। हम है थर्ड फ्लोर पर। सतयुग के तब जो दैवी गुणोंवाले मनुष्य है वो ही फिर आसुरी गुण वाले बन
जाते है। माया का ग्रहण लगने से काले हो जाते है। जैसे चन्द्रमा को भी ग्रहण लगता है नां। वो है
हद की बातें। यह है बेहद की बातें। बेहद का दिन और रात है। गाते भी है ब्रह्मा का दिन ब्रह्मा की
रात परन्तु समझते नही है। कोई पूछे किसको कहते है ब्रह्मा की दिन ब्रह्मा की रात। तो कहेंगे शास्त्रों में
है। व्यास ने शास्त्र बनाये हैं। वेद व्यास कहते है नां। यह व्यास कौन था जिसने भक्ति मार्ग में बैठ
कर शास्त्र बनाये हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। भक्ति मार्ग में शास्त्र तो बहुत चाहिये नां। तो मनुष्य ने बैठ
बनायें है। जिसको ही देख कर और भी मनुष्य बनाते रहते है। एक गीता ऐसी भी बनाई है जिसमें लिखा
है कि हे अर्जुन भिंडी खाने से बादी हो जावेगी। करेला खाने से फायदा होगा। ऐसी-2 बातें बना दी है
अभी तुमको तो शास्त्रों को याद भी नही करना है। सब भूलो। मैं जो सुनाता हूँ वो ही इन अगिन्स से
सुनो। भक्ति मार्ग में औरों के दवारे सुनते-2 दुर्गती को पाते आये हो। मैं तो ज्ञान का सागर हूँ। वो
विद्वान आदि तो भक्ति के शास्त्रों के सागर है। वेद शास्त्र आदि जो बहुत मिलते है उनको टाइटिल
मिलता है। यह है सब भक्ति मार्ग दुर्गती मार्ग की बातें। तुमको तो अब पढ़ना ही है एक बाप से।
जिससे तुम नई दुनियां के मालिक बनते हो। नई दुनियां के मालिक तुम बनते हो पढ़ाई से। यह गीता
पाठशाला है। पाठशाला में सदैव ऐम आबजेक्ट होती है। सत्संग में कोई ऐम आबजेक्ट नही होती। सत्संग
तो है लतसंग। एक दो को लातें मारते रहते है। मनुष्य समझते है भक्ति मार्ग भगवान से मिलने का मार्ग
है। जितना भक्ति करेंगे तो भगवान राजी हो जावेगा और आकर फल देगा। यहसब बातें तुम्ही अभी समझते
हो। भगवान तो एक हुआ नां तो जो ही फल देते है। अब दे रहे है। जो पहले-2 सूर्यवंशी पूज्य थे
उन्ही ने सबकी ज्यास्ती भक्ति की है। वो ही यहां आवेंगे। तुमने ही पहले-2 अव्यभिचारी भक्ति शिव बाबा
की की है। तो जरूर तुम्ही पहले-2 भक्त ठहरे। फिर गिरते-2 तमोप्रधान बन जाते हो। आधा कल्प तुमने
भक्ति की है इसीलिये ही तुमको ही पहले ज्ञान देता हूँ। तुम्हारे में भी नम्बरवार है। यह भी समझना है
यह पढ़ाई है। इसमें बहाना बन नां सके। कोई कहते है हम 10 माईल दूर रहते है। कैसे भी करके आना
जरूर चाहिये। बाबा की याद में तुम 10 मील पैदल करके भी आवेंगे तो कभी भी थकावट नही होगी।
कितना बड़ा खजाना लेने जाते हो। तीर्थों पर मनुष्य पैदल कर दर्शन करने लिये जाते थे। कितने धक्के
खाते है। यह तो एक ही शहर की बात है। बाप कहते है मैं इतनी दूर से आया हूँ तुम कहते हो 5
मील दूर है घर। ओः- खजाना लेने लिये तो दौड़ते आना चाहिये। अमर नाथ पर सिर्फ दर्शन करने लिये
कहां-2 से जाते है। यहां तो अमरनाथ बाबा स्वयं आये है पढ़ाने। विश्व का मालिक बनाते है। तो भी
बहाना करते हो? अमृत वेले तो कोई भी आ सकते है। कोई तुमको लूटेंगे नही। अगर कोई चीज(जेवर)
होंगें तो छीनेंगे। चोरों को चाहिये पदार्थ। परन्तु किसीकी तकदीर में नही है तो बहाने बहुत बनाते
है। पढ़ते नही है तो अपना पद गंवाते है। बाप आते भी भारत में है। भारत को स्वर्ग बनाते है। सैकेंड
में जीवन मुक्ति का रस्ता बताते है। परन्तु कोई पुरुषार्थ करे। कदम नही उठावेंगे तो पहुचेंगे कैसे। ओम